ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

संतान के रूप में केवल विवाहित पुत्रियों वाले वयोवृद्ध अभिभावकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति: जींद जिले का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुश्री सोनम
शोधछात्रा (Ph.D.) , समाजशास्त्र विभाग, कु॰वि॰ कुरुक्षेत्र

संसार में आया प्रत्येक व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत करना चाहता है। युवा अवस्था में व्यक्ति के पास ऊर्जा होती है जिसके आधार पर वह सामाजिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर लेता है, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की एक सुखी व प्रसन्न वृद्धावस्था जीने की आकांक्षा अति सघन व गहन होती है , इसी आकांक्षा की पूर्ति के लिए व्यक्ति आर्थिक उन्नति करता है , सामाजिक संबंध बनाता है व दूसरे अन्य उपाय करता है। वृद्धावस्था में सुखी व सहज जीवन जीने के लिए सामाजिक संरचना द्वारा भी अनेक उपाय किए गए , जैसे:- परिवार , धर्म , आदि। इस अवस्था की अपनी कुछ विशिष्ट आवश्यकताएं भी हैं , जिनकी पूर्ति विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से होती है। इन्ही आवश्यकतायों की पूर्ति के लिए वृद्धावस्था में व्यक्ति परिवार पर निर्भर हो जाता है, विशेषकर संतान पर। वैसे भी भारत में वयोवृद्ध व्यक्तियों की देखभाल अनौपचारिक संस्थाओं जैसे परिवार द्वारा ही की जाती हैं।

जनसंख्या परिवर्तन ने सामाजिक संस्थाओ जैसे स्वास्थ्य सुरक्षा संबन्धित सुविधाएँ, सेवानिवृति आय व्यवस्था, परिवार और श्रम शक्ति के सामने चुनौती खड़ी कर दी है और इस वजह से सामाजिक सुरक्षा, पेंशन तथा स्वास्थ्य संबन्धित पॉलिसी में काफी उलझनें उत्पन्न हो गई हैं। यदपि वृद्ध जनसंख्या को बढ़ाचढ़ा कर एक सामाजिक समस्या के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है तथा जनसांख्यिकीय तथ्यों का प्रयोग अतार्किक भय दिखाने के लिए किया जाता है। जैसे वृद्धों की देखभाल, स्वास्थ्य सुरक्षा व पेंशन खर्च और अन्तरपीढ़ीगत संघर्ष जोकि छोटे सदस्यों के लिए एक बोझ बनने के कारण हमारी संस्थाए टूटने के कगार पर है।(विलसन,2006;148)

प्राचीन काल में जीवन को चार भागों में बांटा गया था, प्रथम ब्रहम्चर्याश्रम, दूसरा गृहस्थाश्रम, तीसरा वानप्रस्थाश्रम व अंतिम संन्यासाश्रम। इनमें से बाद के दो आश्रम में व्यक्ति केवल पथ-प्रदर्शक या सलाहकार की भूमिका में आ जाता है। (आहुजा,1999;8)

लेकिन यह भी सच्चाई है बहुत सारे ऐसे दंपत्ति हैं, जो निसंतान हैं तथा कुछ ऐसे भी है जिनकी केवल पुत्रियाँ हैं; जिन्हे सामान्यतः समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता क्योकि हमारी संस्कृति, मूल्य, आदर्श, परंपराए, रीतिरिवाज आदि का इस पर गहरा असर है। भारत में पितृस्थानीय परिवार पाए जाते है, जंहा पुत्री को विवाह उपरांत अपने पति के घर रहना पड़ता है। यदि पुत्री अपने पिता के घर रहती है, तो उसे उचित नहीं समझा जाता। अधिकांशतः उतर भारत में जाति अंतर्विवाह को छोड़ कर बाकि स्वरूपों के साथ बहिर्विवाह प्रचलन में है, यानि दूसरे समूह से अपने जीवन साथी का चुनाव करते हैं।

ये सब परंपरा या रीति रिवाज के तौर पर चली आ रही हैं, क्योंकि जब एक विचार व्यवहार में आकर उसकी पुनरावृति बार-बार होती है तो वह आदत बन जाती है। जब एक आदत की समूह के द्वारा पुनरावृति की जाती है तो वह जनरीति का रूप धारण करती है; जनरीति समूह का अनुभव बनती है और उसे सामाजिक मान्यता प्राप्त होती है, तो वह प्रथा बन जाती है। इसी प्रकार की समस्याएँ जो पुत्री के विदा होने के बाद आती हैं। हरियाणा में तो बीस वर्ष पहले तक पुत्री के विवाह के पश्चात पिता अपनी पुत्री के घर नहीं जा सकते थे, पिता को गाँव के बाहर बैठाया जाता था। दूसरे गाँव से उनके लिए भोजन लाया जाता था। पुरानी मान्यताओं के अनुसार "पिता अपनी पुत्री के घर का पानी भी नही पी सकता" परंतु जब संतान के रूप में केवल पुत्री हो तो वह स्थिति थोड़ी चिंता ग्रस्त हो जाती है। वृद्धावस्था में पुत्र–पुत्रवधू अपने माता पिता की देखभाल करते हैं। जंहा केवल पुत्री है तथा विवाह के पश्चात वह अपने पति के घर में रहती है, तो ऐसी स्थिति में वृद्ध पिता के भाई या उनके बच्चे व्यक्ति की देखभाल करते हैं तथा जो जमीन जायदाद होती है उसकी देख रेख करते हैं। उसमें भी यह कारक काम करता है कि अगर वे अपने भाई या पिता के भाई की सेवा करेंगे, तो सेवा मूल्य के रूप मे उन्हें धन या जमीन जायदाद प्राप्त होगी। धन से संबन्धित लालच के कारण हो सकता है कि वे कुछ देखभाल करें।

वृद्धावस्था जीवन की सच्चाई है। आधुनिक समय में चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता के कारण व्यक्ति की औसत आयु में वृद्धि हुई है। वर्ष 1990,14 दिसंबर को नेशन जर्नल असम्बली के द्वारा 1 अक्तूबर को अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस के रूप में मनाया जाता है।(UN) भारत एक विकासशील देश है। जहाँ पर वृद्ध व्यक्तियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। 2011 में वृद्धों की संख्या कुल जनसंख्या का 8% है और यह प्रत्येक वर्ष बढ़ती जा रही है। भारत में वृद्धजनों की जनसंख्या व वृद्धि का विस्तरित विवरण निम्न सारणी में देखा जा सकता है:-

RRIJM 2015, All Rights Reserved

Census Year	Total %	Gender		Place of residence	
		Male	Female	Rural	Urban
1961	5.6	5.5	5.8	5.8	4.7
1971	6.0	5.9	6.0	6.2	5.0
1981	6.5	6.4	6.6	6.8	5.4
1991	6.8	6.7	6.8	7.1	5.7
2001	7.4	7.1	7.8	7.7	6.7

सिचुएशन एनालिसिस ऑफ़ दी एल्डरली इन इंडिया(2011;27)

Census Year	Total	Gender		Place of residence	
		Male	Female	Rural	Urban
2011	8	7.7	8.4	8.1	7.9

स्रोत : भारत की जनगणना (2011)

शोध साहित्य :-

जे. शेल्डन(1949) ने अपने लेख **"ओल्ड एज प्रॉबलम इन फैमिली"** में वृद्धों से संबन्धित दो मुख्य मुद्दों पर जोर दिया है, पहला वृद्धों की वास्तविक स्थिति का तथ्यात्मक वर्णन जोकि वल्वरहैम्पटन (लंदन) सर्वे पर आधारित है तथा दूसरा वृद्धों की देखभाल के लिए परिवार की आवश्यकता से संबन्धित है। सर्वे के लिए उन्होंने प्रत्येक 30 वृद्ध व्यक्तियों में से एक वृद्ध व्यक्ति का चुनाव रेंडम्ली विधि से किया है। चयनित उत्तरदाताओं में से 98% घरों में रहते हैं व 2% वृद्ध आश्रम में। शोध में यह पाया गया कि 4% वृद्ध व्यक्तियों के बच्चे बिलकुल पड़ोस में रहते हैं। 10% के बच्चे उसी गली में रहते हैं। 20% वृद्ध ऐसे हैं जिनके रिश्तेदार आधा मील से भी कम दूरी पर रहते हैं, 40% वृद्ध बच्चों के घरों में आते जाते हैं। इसी प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर वृद्ध व्यक्ति अपने बच्चों के घर नजदीक होते हुए भी पुराने घर में रहना पसंद करते हैं, लेकिन यह तथ्य महत्वपूर्ण है। बच्चों के बिलकुल साथ वाले घर में रहने वाले 71% वृद्धों का निवास उनकी पुत्री के घर के पास में हैं। शोध में यह भी जाना गया कि जब वृद्ध बीमार होते हैं तो उनकी देखभाल कौन करता हैं। यदि पुरुष वृद्ध व्यक्ति बीमार होते है तो 44.1% केसो में देखभाल उनकी पत्नी द्वारा की जाती हैं 25% देखभाल पुत्रियों द्वारा की जाती हैं; केवल 4.4% मामलो में यह देखभाल पुत्रवधू द्वारा की गयी 18.8% केस में यह देखभाल पड़ोसी द्वारा की गयी।

सरस्वती मित्रा (1987) ने **"सोश्ल एडजस्टमैन्ट इन ओल्ड एज"** के नाम से चंडीगढ़ में रहने वाले केंद्रीय राज्य सरकार से सेवानिवृत व पेंशन धारक पुरुष वृद्धों का अध्ययन किया। जिसमें कुल 936 व्यक्तियों में से रेंडम निदर्शन के माध्यम से 300 व्यक्तियों को चुना गया। इस शोध का मुख्य उद्देश्य चंडीगढ़ में रहने वाले सेवानिवृत सरकारी कर्मचारियों के 'अच्छा तालमेल' के सहसंबंध का अध्ययन करना है। यहां तालमेल से अभिप्राय सेवानिवृत्त लोगों द्वारा सद्भावना-पूर्ण जीवन जीने की स्थिति से है। शोध में तालमेल पूर्ण जीवन के सूचकांक का 30 तत्वों के माध्यम से निर्माण किया, जिनके द्वारा सेवानिवृत्त व्यक्तियों के संतोषजनक व सुखी जीवन को मापा गया। इस शोध में कुछ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व आर्थिक कारकों का अध्ययन किया गया, प्रथम परिस्थितकीय कारक – जैसे शिक्षा, सेवानृविति से पहले व्यवसाय, वर्तमान आर्थिक स्थिति स्वास्थ स्थिति तथा आयु आदि का प्रभाव महत्वपूर्ण पाया गया। द्वितीय सामाजिक दृष्टिकोण संबंधी कारक जिनमें सामाजिक परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण, बच्चों के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप संबंधी दृष्टिकोण का वृद्धों के अच्छे तालमेल के साथ प्रत्यक्ष सकारात्मक सहसंबंध पाया गया अर्थात जितना अधिक वे सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करने व बच्चों के निजी जीवन में कम से कम हस्तक्षेप करते है, उतना ही अधिक और अच्छा उनके जीवन में तालमेल पाया जाता है। तीसरा यह पाया कि एक संतोषजनक जीवन के लिए वर्तमान समाज में आधुनिकतापूर्ण दृष्टिकोण का होना महत्वपूर्ण है। जबकि इस संबंध में धर्म की भूमिका को नकारा गया है। चतुर्थ कारक व्यवहार से संबन्धित है जिसमें परिवार के सदस्यो के साथ अंतःक्रिया, मित्रों, पड़ोसियों, व सम्बन्धियों के साथ अंतक्रिया, स्वयं सेवी संगठनों की गतिविधियों में भागीदारी कोई विशिष्ट शोक व धार्मिक गतिविधियों के माध्यम से वृद्ध अवस्था के जीवन को अधिक से अधिक तालमेल पूर्ण, सामंजस्य पूर्ण व सुखी बनाया जा सकता है।

डॉ. अल्पना बिमल (2004) के द्वारा लिखित पुस्तक **"समायोजन का समाजशास्त्र"** में अध्ययन का उदेश्य यह जानना है कि सेवानिवृत व्यक्ति कैसे बदलती हुई परिस्थितियों में स्वयं को समूह, परिवार, समाज के साथ जोड़े रखता है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में जयपुर शहर का चुनाव किया गया। लॉटरी विधि के द्वारा 200 (राजपत्रित) 200 (अराजपत्रित) का चयन किया गया। इस अध्ययन हेतु 15 वर्ष तक के सेवानिवृत व्यक्तियों को शामिल किया गया। तथ्यों का एकीकरण प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची द्वारा किया। अध्ययन के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि वृद्धजन अपने परिवार को समय दे पाते हैं। 47.5% उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके मित्रों की संख्या में कमी आई तथा 20.25% के मित्रों में वृद्धि हुई। बीमारी के समय जीवनसाथी का सहयोग अधिक होता

RRIJM 2015, All Rights Reserved

है; जो वृद्ध अकेले यानि तलाकशुदा या जिनके जीवनसाथी की मृत्यु हो गयी है, उनके मित्र कम होते हैं, वर्तमान पीढ़ी के साथ तालमेल अच्छा है। राजपत्रित समूह से 57.75% वृद्धों का कहना था कि सेवानिवृत के पश्चात् उनके आदर भाव में वृद्धि हुई है जबकि 42.25% का उत्तर नहीं में था। अराजपत्रित समूह से 27.5% वृद्धों का कहना था कि उनके आदर भाव में वृद्धि हुई तथा 72.5% का कहना था कि उनके आदरभाव में फर्क नहीं पड़ा है। 37.5% राजपत्रित वृद्धों ने पुनः कम करने की इच्छा बताई। 40.5% अराजपत्रित वृद्ध पुनः काम करने की इच्छा बताई जबकि 59.5% बुजुर्ग काम नहीं करना चाहते। जीवन-साथी से मतभेद संबन्धित राजपत्रित वृद्धों का कहना था कि वे पूर्व की भांति रहते हैं। जबकि 7.93% के अनुसार पहले से अधिक मतभेद हैं।

रोहिणी पांडे तथा अंजु मल्होत्रा (2006) के द्वारा लिखित शोध पत्र **"सन प्रेफ़ंस एंड डोटर नेगलेक्ट इन इंडिया"** का उद्देश्य यह जानना है कि पुत्र प्राथमिकता की विचारधारा कितनी प्रबल है, ऐसे कौन से तथ्य हैं जो पुत्र प्राथमिकता को घटा रहे हैं। पुत्र प्राथमिकता का लड़कियों के स्वास्थ्य तथा देखभाल पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन के लिए नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे, इंडिया के द्वारा 50,136 विवाहित महिलाएं तथा उनके 5 वर्ष से छोटे बच्चों का चयन किया गया। इस अध्ययन के माध्यम से यह तथ्य ज्ञात हुए कि पुत्र प्राथमिकता की अवधारणा सार्वभौमिक नहीं है, माताएँ अपने बच्चों में संतुलन बनाए रखना चाहती हैं। शिक्षा का प्रभाव पुत्र प्राथमिकता को कम करने का कारण बन रहा है। लड़कियों को भेद-भाव का सामना करना पड़ता है, परंतु सभी जगह यह समान नहीं हैं।

गंगाधर बी. सोनाकर तथा आर. शिव प्रसाद (2007) ने अपने शोध पत्र **"इंटेरजेनेरेशनल ईसु इन ओल्ड एज"** में बुजुर्गो तथा युवाओं के बीच संबंध पर प्रकाश डाला गया है। इसके लिए उन्होंने सेमी स्ट्रक्चर साक्षात्कार अनुसूची, जीवन संतुष्टी सूचकांक का प्रयोग किया, जिसमें उन्होनें कर्नाटका के गुलबर्ग जिले के दो गाँव तथा दो वृद्धाश्रम का अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि युवाओं तथा बुजुर्गों के सम्बन्धों में मूल्य व आदर्श समाप्त होते जा रहे हैं। युवा यह मानते हैं कि वे उत्पादन व उपयोग के योग्य नही हैं। युवा व वृद्धों के मध्य मतभेद पाया गया व जीवन शैली मे अंतर पाया गया हैं।

रामा प्रसाद और शैली बाउल्ड (2007) द्वारा लिखित शोध पत्र **"इंटरजनरेशनल हाउसहोल्ड ऑफ इंडियन अमेरीकन"** में वृद्ध माता-पिता तथा उनके वयस्क बच्चों के तजुर्बो के बारे में अध्ययन किया गया है। उत्तरदाताओं का चयन नॉर्थ कास्टले, न्यू जर्सी, नयूयार्क, न्यू कैरोलिना, मेरी लैंड, वाशिंगटन और कैलिफोर्निया से स्नो बाल सेंपलिंग के द्वारा 40 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिसमें 11 पुरुष तथा 29 महिलाएं शामिल हैं। विदेश में रहने वाले वृद्धजनों की ज़िम्मेदारी उनकी संतान के आत्म निर्भर हो जाने के पश्चात भी खत्म नहीं होती बल्कि दोगुनी हो जाती है, क्योंकि उन्हें तीसरी पीढ़ी का भी ख्याल रखना होता है। इस कारण वृद्धजनों की सेवानिवृति उनके जीवन में आराम और शांति नहीं लाती, बल्कि एक नए वातावरण में नए तरह की जिम्मेवारीयां ले के आती है, उन्हें दो मुख्य समस्याएं परेशान करती हैं, एक तो वे स्वयं लोगो से मिलने बाहर नही जा सकते, दूसरा आर्थिक निर्भरता। हालांकि अध्ययन में ये पाया गया कि ये वृद्धजन परिवार पर निर्भर न हो करके परिवार के लिए एक सहायक की तरह छोटे बच्चों की घर पर देखभाल में सहयोग करते हैं।

आसिया नसरीन (2009) के द्वारा लिखित पुस्तक **"अर्बन एल्ड़र्ली"** का उद्देश्य ऐसे वृद्धों का अध्ययन करना है जो सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर हों तथा नेशनल कैपिटल टेररिटरी (एनसीटी) के अंतर्गत आते हैं।

- परिवार व समुदाय मे रहने वाले वृद्धों की आर्थिक, स्वास्थ्य व सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना।
- वृद्धों के द्वारा अपनी समस्याओं से निपटने के लिए क्या कूटनीति अपनायी जाती है।
- एनसीटी मे उपलब्ध समाज सेवा का वर्णन व मूल्यांकन करना।
- ऐसे सुझाव बताना ताकि शहरी क्षेत्र मे रहने वाले वृद्धों की स्थिति में सुधार हो।

इस शोध के लिए दिल्ली के नेशनल कैपिटल टेररिटरी, जामामश्जिद, हजरत निज़ामुद्दीन तथा सीलमपुर, प्रत्येक क्षेत्र से 100 वृद्धों का चयन सिम्पल रेंडम नंबर द्वारा किया गया, जिसमें 50 पुरुष व 50 महिलायें शामिल हैं। तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा किया गया। शोध में उत्तरदातायों की औसत आयु 68 वर्ष व अधिकतर वे अनपढ़ पाये गए। लगभग 66% वृद्ध व्यक्ति किसी भी तरह की आर्थिक गतिविधि में संलगन नहीं थे। सभी अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बच्चों पर निर्भर हैं तथा वृद्धावस्था स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से भी पीड़ित पाये गए, जैसे:- बढ़ती कमजोरी, घटती दृष्टि, श्रवण संबन्धित समस्यायें, हाजमे की समस्यायेँ व अन्य हड्डियों की बीमारी आदि। पुत्र व पुत्रियाँ न केवल उनकी देखभाल करते हैं बल्कि उनका चिकित्सा खर्च भी उठाते हैं। ¾ से अधिक वृद्ध व्यक्तियों का सामाजिक जीवन सक्रिय पाया गया व घरेलु निर्णय लेने की प्रकिया में भागीदारी पाई गई। जेंडर विभेद महिलाओं के पक्ष में नही था। सबसे बड़ी महत्वपूर्ण समस्या वृद्धों की आर्थिक स्थिति से संबन्धित व उससे उपजी अन्य समस्याएँ रही। आर्थिक समस्या व सामाजिक उपेक्षा से उत्पन्न भावनात्मक असंतुलन से

पार पाने के लिए वृद्ध व्यक्तियों ने अधिकतर धर्म का सहारा लिया व धर्म सामाजिक एकता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ।

जे. बालमौरुगन तथा डॉ. ज़ी. रामथीर्थम (2012) के द्वारा लिखित शोध पत्र "**हेल्थ प्रोब्लेम ऑफ एजेड पीपल**" का उदेश्य ग्रामीण वृद्धों का सामाजिक आर्थिक स्तर जानना व स्वास्थ संबंधी समस्याओं को जानना है। यह शोध वर्णनात्मक है तथा उदेश्यपूर्ण प्रतिदर्शन पद्धति का प्रयोग करके 213 उत्तरदाताओं का चयन पांडिचेरी के बाहोर, नेताप्कक्म, मन्नाडिपेत से किया गया एवं यह निष्कर्ष दिया गया कि वृद्धजनों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में जेंडर विभेद के अनुसार प्रासंगिक अंतर होता है। स्त्री और पुरुष वृद्धजनों की समस्याएं अलग-अलग हैं।

सरिता शर्मा (2015) के द्वारा लिखित लेख **"माता-पिता का बढ़ता अकेलापन"** में आज के समय में माता-पिता तथा बच्चों के बीच के रिश्ते को बताया गया है। बच्चों का अपने माता-पिता के प्रति क्या दायित्व है, बच्चे अपने माता-पिता को भावनात्मक रूप से करीब लाएँ, माता-पिता को अपनी खुशियों का हिस्सा बनाएं, समय-समय पर उनसे मिलते रहें तथा इस लेख में "गिव एंड टेक" थ्यूरी के बारे में बताया गया है। माता-पिता अपने बच्चे का पालन पोषण करते हुए उनकी सभी बातों का ख्याल रखते हैं, उनकी समस्याओं को सुनते हैं। उसी प्रकार बुढ़ापे में माता-पिता यह आशा रखते हैं कि संतान उनकी समस्याओं को सुनें, समझें तथा अपना थोड़ा समय अपने माता-पिता को भी दें, जिसमें साथ भोजन करना और बाहर घूमने जाना भी शामिल हैं।

शोध कार्य का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध में उत्तरदाताओं के सामाजिक – आर्थिक स्तर को समझने का प्रयास किया गया है ।

शोध कार्य का महत्व :-

हरियाणा पूरे भारत में जनसांख्यिकीय तौर पर गिरते हुए लिंग अनुपात 879/1000(हरियाणा सेंसस 2011) के लिए जाना जाता है। सभी सरकारी व गैर सरकारी ऐजेंसी का केंद्र बिन्दु लिंग अनुपात रहता है। पुराने समय से संतान के रूप में पुत्र को प्राथमिकता दी जाती है। इसके कुछ कारण धार्मिक विश्वासों, रूढ़िवादिता, आदि मे ढूँढे जाते हैं, लेकिन तार्किक रूप से पुत्र को प्राथमिकता देने का कारण एक तरह से जीवन की अंतिम अवस्था वृद्धावस्था की असुरक्षा रहा है। मानव की मौलिक आवश्यकताओं में सुरक्षा भी आती है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन के प्रत्येक चरण पर कई तरह की सुरक्षा चाहता है, जैसे:- आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, पारिवारिक व मानसिक सुरक्षा, ये सभी सुरक्षाएं प्राथमिक तौर पर उसे अपने परिवार से मिलती हैं। परिवार में भी यह निर्भर करता है कि सामाजिक परंपराएँ, रीति रिवाज किस प्रकार हैं। पितृस्थानीय परिवार में वृद्धावस्था में प्रत्येक तरह की सुरक्षा पुत्र से होती है। यही वह कारण है, जिससे परिवार में पुत्र को प्राथमिकता दी जाती है।

समाजशास्त्र में वृद्धों से संबन्धित अध्ययन काफी मात्रा में हुए हैं। इसके अलावा अंतरपीढ़ी अध्ययन भी होते रहे हैं। जिसमें दादा-दादी, माता–पिता व बच्चों को शामिल किया गया। वृद्धों को देखभाल करने वाले व नयी पीढ़ी के तीन स्वरूपों में देखा गया हैं, लेकिन एक महत्वपूर्ण पक्ष जोकि वृद्ध अवस्था से संबन्धित है, परिवार व्यवस्था से संबन्धित हैं, लगभग उपेक्षित ही रहा है। विशेषकर ऐसे वृद्ध दंपत्ति जो नाना-नानी तो हैं, परंतु दादा-दादी नहीं है अर्थात संतान के रूप में केवल उनकी पुत्रियां हैं।

शोध क्षेत्र :-

इस शोध में भारत राष्ट्र के हरियाणा प्रांत के जींद जिले का चयन शोध क्षेत्र के तौर पर किया गया है जिसका विवरण निम्नलिखित है :

हरियाणा :-

हरियाणा भारत का 20वाँ राज्य है यह 1 नवंबर 1966 को अस्तित्व में आया जिसमें 21 जिले शामिल हैं। हरियाणा 1966 से पहले पंजाब का भाग था। हरियाणा का इतिहास बहुत ही महत्वपूर्ण है। जहाँ विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य 'महाभारत' का युद्ध शामिल है। महाभारत का युद्ध सरस्वती नदी के किनारे बसे कुरुक्षेत्र में हुआ, हिन्दुओं का पवित्र ग्रंथ मानी जाने वाली गीता का उपदेश श्री कृष्ण ने अर्जुन को य हीं पर दिया। हरियाणा का अर्थ:- हरियाणा दो शब्दो से मिलकर बना है हरि = भगवान, और अर्चण = निवास , यानि जहाँ भगवान का निवास हो।(britannica) इस राज्य को ब्रहमवर्त तथा ब्रह्मर्षि के अतिरिक्त ब्रह्म की उत्तरवेदी के नाम से भी पुकारा गया है।(mahra.haryana) हरियाणा की कुल जनसंख्या 25,351,462 है जिन में पुरुषों की कुल संख्या 13 ,494,734 तथा महिलाओं की कुल जनसंख्या 11 ,856,728 है, लिंग अनुपात 879/1000, साक्षरता दर 71.42% , कुल जनसंख्या मे से वृद्धों की संख्या 21 ,93,755 है वृद्ध पुरुष 10,88,621 तथा वृद्ध महिलाएं 11 ,05,135 हैं। (जिला सांख्यियकीय सारांश , 2015)

जींद:-

प्रस्तुत शोध में यूनिवर्स के तौर पर हरियाणा राज्य के जींद जिले का चुनाव किया गया। जींद हरियाणा राज्य का एक जिला है। इसका नाम देवी जयंती के नाम पर जयंतापूरी रखा गया ,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

परंतु बाद में बदल कर जींद हो गया। जींद उत्तर हरियाणा में स्थित है। जिसकी कुल जनसंख्या 1,334,152 है, जनसंख्या वृद्धि दर 12.13% तथा लिंग अनुपात 871/1000 , साक्षरता दर 71.44% है। कुल जनसंख्या में पुरुषों की संख्या 713,006 तथा महिलाओं की संख्या 621,146 है। (सेंसस,2011)

निदर्शन विधि :-

उपरोक्त जनसंख्या मे ऐसी वयोवृद्ध स्त्री पुरुषों की जनसंख्या भी है जिनकी संतान के तौर पर केवल विवाहित पुत्रियाँ हैं। चूंकि ऐसी जनसंख्या के बारे में कोई सटीक जानकारी व आकड़े (सरकारी व गैर सरकारी) उपलब्ध नहीं हैं; इन परिस्थितियों में शोधकर्ता के सामने संभावित या असंभावित निदर्शन की विधियाँ अपनाना गौण हो जाता है; विशेषकर व्यक्तियों के चयन में, इसलिए जींद जिले के तीन खंड जींद , नरवाना , उचाना से उत्तरदाताओं का चयन किया गया।

आंकड़े संकलन की प्रविधि:-

प्राथमिक आकड़ों व तथ्यों के संग्रह के लिए शोधकत्री द्वारा स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर लोगों से ऐसे वृद्ध व्यक्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त की व उनसे स्वयं मिले तथा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से शोध उद्देश्यों से संबन्धित तथ्यों को एकत्र किया गया। चूंकि उत्तरदाताओं की शिक्षा संबंधी जानकारी उपलब्ध नही थी इसलिए प्रस्तुत शोध में प्रश्नावली तकनीक का प्रयोग न करते हुए आंकड़ों के संग्रहण में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया हैं।

सामाजिक आर्थिक पृष्ठ-भूमि

उपरोक्त अंकित शोध उद्देश्य के उत्तर जानने के लिए निम्न लिखित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को साक्षात्कार अनुसूची में प्रयोग किया गया जैसे :-

उत्तरदाताओं का आयु अनुसार वितरण

सारणी 1 : उत्तरदाताओं का आयु अनुसार वितरण

आयु	*आवृति*	*प्रतिशत %*
60-65 वर्ष	82	56.2%
66-70 वर्ष	31	21.2%
71-75 वर्ष	19	13.0%
76-80 वर्ष	11	7.5%
81-85 वर्ष	3	2.1%
कुल	146	100.0%

उपरोक्त सारणी सं. 1 से यह स्पष्ट होता हैं कि उत्तरदाताओं मे 60-65 वर्ष वाले वृद्धों की संख्या सबसे अधिक हैं जोकि कुल उत्तरदाताओं का ½ भाग से ज्यादा 56.2% हैं, 66-70 वर्ष के वृद्ध कुल उत्तरदाताओं के पाचवें भाग से कुछ अधिक 21.2% हैं, 71-75 वर्ष के वृद्धों की संख्या दसवां भाग से थोडी सी अधिक 13.0 % हैं, 76-80 वर्ष के वृद्धों की संख्या 7.5%, अंत में 81-85 वर्ष के वृद्धों की संख्या 2.1% हैं।

उत्तरदाताओं का लिंग अनुसार वितरण

सारणी संख्या 2 : उत्तरदाताओं का लिंग अनुसार वितरण

लिंग	*आवृति*	*प्रतिशत %*
महिला	86	58.9%
पुरुष	60	41.1%
कुल	146	100.0%

उपरोक्त सारणी सं. 2 से यह स्पष्ट होता हैं कि कुल उत्तरदाताओं में अधिक संख्या महिलाओं कि हैं जोकि पूर्ण का ½ भाग से अधिक 58.9% हैं जबकि पुरुष कुल संख्या का ½ वे भाग से कम 41.1% हैं

वैवाहिक स्थिति व सहचर्य

सारणी संख्या 3 : उत्तरदाताओं का वैवाहिक सहचर्य

सहचर्य	*आवृति*	*प्रतिशत %*
पति के साथ	53	36.3%
पत्नी के साथ	51	34.9%
विधवा	33	22.6%
विधुर	9	6.2%
कुल	146	100.0%

उपरोक्त सारणी सं. 3 में उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति का वर्णन किया हैं कुल उत्तरदाताओं में से एक तिहाई भाग से कुछ अधिक महिलायें 36.3% पति के साथ रहती हैं तथा एक तिहाई भाग से कुछ अधिक पुरुष 34.9% पत्नी के साथ रहते हैं जबकि पाचवां भाग 22.6% ऐसी महिलाओं का हैं जोकि विधवा हैं। 6.2% पुरुष विधुर है। पति या पत्नी के साथ रहने वाले उत्तरदाताओं की संख्या में अंतर इस कारण से है क्योंकि दो उत्तरदाताओं के पति या पत्नी का साक्षात्कार करना संभव नही हो सका हालांकि वे पति या पत्नी के सहचर्य में हैं।

उत्तरदाता किसके साथ रहते हैं

सारणी संख्या 4 : उत्तरदाता किसके साथ रहते हैं

किसके साथ रहते हैं	*लिंग अनुसार विवरण*		*कुल*
	महिला	*पुरुष*	
पत्नी के साथ	_	46(31.5%)	46(31.5%)
पति के साथ	48(32.9%)	_	48(32.9%)
दोहता या दोहती के साथ	3(2.1%)	1(.7%)	4(2.7%)

अकेले रहते हैं	28(19.2%)	5(3.4%)	33(22.6%)
दो पत्नियों के साथ	_	1(.7%)	1(.7%)
भाई के साथ रहते हैं	_	1(.7%)	1(.7%)
बेटी के पास रहते हैं	_	2(1.4%)	2(1.4%)
माता / सास / पत्नी / पति	3(2.1%)	3(2.1%)	6(4.1%)
पति व पति की दूसरी पत्नी के साथ	1(.7%)	_	1(.7%)
अस्वस्थ रहनें के कारण बेटी साथ रहती हैं	2(1.4%)	_	2(1.4%)
पति / पत्नी / दोहती	1(.7%)	1(.7%)	2(1.4%)
कुल	86(58.9%)	60(41.1%)	146(100.0%)

सारणी संख्या 4 के द्वारा ज्ञात होता हैं कि कुल उत्तरदाताओं में से लगभग एक तिहाई 31.5% उत्तरदाता पुरुष अपनी पत्नी के साथ रहते हैं। एक तिहाई से अधिक 32.9% महिलाएं पति के साथ रहती हैं। 2.1% महिलाएँ व .7% पुरुष अपने दोहता या दोहती के साथ रहते हैं। 19.2% महिलाएँ व 3.4% पुरुष अपने घर में अकेले रहते हैं। .7% उत्तरदाता अपनी दो पत्नियों के साथ रहते हैं। .7% उत्तरदाता अपने भाई के साथ रहते हैं। 1.4% पुरुष अस्वस्थ होने के कारण बेटी के साथ , 2.1% महिलाएँ पति एवं सास के साथ वहीं 2.1% पुरुष पत्नी व माता के साथ रहते हैं , .7% महिला पति एवं पति की दूसरी पत्नी के साथ, अस्वस्थ रहने के कारण 1.4% महिलाओं की बेटियाँ उनके देखभाल के लिए साथ में रहती हैं , .7% महिला व .7% पुरुष दोहती को साथ रखते हैं, उत्तरदाताओं की संख्या में अंतर इस कारण से है क्योंकि 2 उत्तरदाताओं के पति या पत्नी का साक्षात्कार करना संभव नही हो सका हालांकि वे पति या पत्नी के सहचर्य में हैं।

<u>श्रेणी अनुसार विवरण</u>

सारणी संख्या 5 : उत्तरदाताओं की श्रेणी

श्रेणी	*आवृति*	*प्रतिशत %*
सामान्य वर्ग	95	65.1%
अन्य पिछड़ा वर्ग	27	18.5%
अनुसूचित जाति	24	16.4%
कुल	146	100.0%

उपरोक्त सारणी सं 5 यह दर्शाती हैं दो तिहाई भाग से कुछ कम 65.1% उत्तरदाता सामान्य वर्ग से संबन्धित हैं व पाँच वे भाग से न्यूनतर अन्य पिछड़ा वर्ग 18.5% एवं 16.4% उत्तरदाता अनुसूचित जनजाति से संबन्धित हैं।

<u>उत्तरदाताओं का धर्म अनुसार विवरण</u>

सारणी 6 : उत्तरदाताओं धर्म अनुसार विवरण

धर्म	*आवृति*	*प्रतिशत %*
हिन्दू	146	100.0%
कुल	146	100.0%

सारणी संख्या 6 यह दर्शाती है कि सभी उत्तरदाता हिन्दू धर्म से संबंध रखते हैं।

<u>निवास स्थान</u>

सारणी संख्या 7 : उत्तरदाताओं के निवास स्थान का विवरण

निवास	*आवृति*	*प्रतिशत %*
गाँव	102	69.9%
शहर	44	30.1%
कुल	146	100.0%

उपरोक्त सारणी संख्या 7 यह दर्शाती है कि उत्तरदाताओं का दो तिहाई वां भाग 69.9% ग्रामीण क्षेत्र में निवास करता हैं तथा कुल उत्तरदाताओं में से एक तिहाई उत्तरदाता 30.1% शहरी क्षेत्र में निवास करते हैं

<u>व्यवसाय अनुसार विवरण</u>

सारणी संख्या 8 : उत्तरदाताओं का व्यवसाय

व्यवसाय	*आवृति*	*प्रतिशत %*
गृहणी	70	47.9%
खेती	34	23.3%
रिटायर्ड	18	12.3%
मजदूरी	10	6.8%
कुछ नही	10	6.8%
दुकानदार	2	1.4%
समाज सेवक	1	.7%
पशु पालन	1	.7%
कुल	146	100.0%

सारणी संख्या 8 के द्वारा यह पता चलता है कि उत्तरदाताओं में से ½ से थोड़ा कम 47.9% महिलाएं गृहणी हैं, पाँच वाँ भाग उत्तरदाताओं का 23.3% स्वयं खेती करता हैं या जमीन ठेके पर दी हुई है, दसवां भाग से थोड़ा ज्यादा 12.3% उत्तरदाता सरकारी संस्थान से रिटायर्ड है, 6.8% उत्तरदाता मजदूरी करते हैं जबकि 6.8% उत्तरदाताओं का स्वयं का कोई व्यवसाय नही है, 1.4% दुकानदार, .7% उत्तरदाता सामाजिक कार्यकर्ता , .7% उत्तरदाता पशुओं का पालन करते हैं।

सालाना आय

सारणी 9 : उत्तरदाताओं की सालाना आय

सालाना आय	*आवृति*	*प्रतिशत %*
16800 वृद्धावस्था पेंशन	51	34.9%
50,001 से अधिक	29	19.9%
20,001-30,000	23	15.8%
पति पर निर्भर	22	15.1%
17,000-20,000	10	6.8%
30,001-40,000	7	4.8%
40,001-50,000	4	2.7%
कुल	146	100.0%

सारणी संख्या 9 के द्वारा उत्तरदाताओं की सालाना आय का पता चलता हैं एक तिहाई भाग से कुछ ज्यादा 34.9% उत्तरदाता की सालाना आय 16800 हैं जिसकी आय का स्रोत बुढ़ापा पेंशन, विधवा पेंशन, लाड़ली पेंशन, या विकलांग पेंशन हैं, पचवां भाग उत्तरदाताओं 19.9% की सालाना आय 50,000 से अधिक है। 15.8% उत्तरदाताओं की सालाना आय 20,001 से तीस हज़ार के बीच है, 15.1% महिला उत्तरदाता अपने पति पर निर्भर हैं जिनकी कोई सालाना आय नही हैं, 6. 8% उत्तरदाताओं की सालाना आय सत्रह हज़ार से बीस हज़ार हैं, 4.8% उत्तदाताओं की 30,001 से 40 ,000, अंत में 2. 7% उत्तरदाताओं की सालाना आय 40,001 से 50,000 हैं।

उत्तरदाताओं के आय के स्रोत का साधन

सारणी संख्या 10 : उत्तरदाताओं के आय के स्रोत का साधन

स्रोत	*आवृति*	*प्रतिशत %*
बुढ़ापा पेंशन	36	24.7%
पेंशन व जमीन ठेके पर	32	21.9%
सरकारी पेंशन	22	15.1%
पति पर निर्भर	22	15.1%
विधवा पेंशन	8	5.5%
पेंशन व मजदूरी	7	4.8%
जमीन ठेके पर	4	2.7%
बुढ़ापा पेंशन व एफ॰डी॰	4	2.7%
मजदूरी	3	2.1%
लाड़ली पेंशन	2	1.4%
पेंशन व दुकान	2	1.4%
एफ॰डी॰ व सरकारी पेंशन	1	.7%
विकलांग पेंशन	1	.7%
दुकान	1	.7%
पेंशन व पशु पालन	1	.7%
कुल	146	100.0%

सारणी संख्या 10 में उत्तरदाताओं के आय के स्रोत का विवरण दिया गया हैं जो, इस प्रकार हैं :- कुल उत्तरदाताओ में से लगभग ¼ भाग 24.7% उत्तरदाताओं की आय का साधन बुढ़ापा पेंशन हैं, उत्तरदाताओं का पाचवां भाग से थोड़ा अधिक 21.9% के आय का स्रोत पेंशन(बुढ़ापा,विधवा,सरकारी) व जमीन ठेके पर देना हैं, पाचवां भाग से न्यूनतर 15.1% उत्तरदाता सरकारी पेंशन, 15.1% महिलाओं का स्वयं के पास आय का स्रोत नही हैं वह पति पर निर्भर हैं, 5.5% महिलाएं विधवा पेंशन लेती हैं, 4.8% उत्तरदाता पेंशन(बुढ़ापा, लाड़ली,विधवा,)लेते है व मजदूरी करते हैं, 2.7% उत्तरदाताओं के आय के स्रोत का माध्यम जमीन ठेके पर देना, 2.7% उत्तरदाताओं की आय का स्रोत बुढ़ापा पेंशन व एफ.डी., 2.1% उत्तरदाताओं की मजदूरी आय का स्रोत हैं, 1.4% उत्तरदाता लाड़ली पेंशन, 1.4% उत्तरदाता पेंशन(बुढ़ापा या लाड़ली) व दुकान, .7% उत्तरदाता एफ. डी. व सरकारी पेंशन, .7% उत्तरदाता विकलांग पेंशन, व .7% उत्तरदाता दुकानदार हैं .7% उत्तरदाता की बुढ़ापा पेंशन व पशु पालन आय का स्रोत हैं।

निष्कर्ष :-

वर्तमान शोध का विषय चूंकि वयोवृद्ध के समाजशास्त्र(Gerontology) में एक भिन्न आयाम को प्रस्तुत करता हैं। इसलिए निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए पहले हुए शोधो की परिचर्चा पर अत्यधिक निर्भर नही हुआ जा सकता। वर्तमान शोध से पहले वयोवृद्ध की समस्याओं से संबन्धित शोध तो प्रचुर मात्र में हुए हैं , लेकिन संतान के रूप में केवल विवाहित पुत्रियों वाले वयोवृद्धों की समस्याओं से संबंधित शोध नगण्य हैं। फिर भी पूर्ववर्ती शोध वृद्ध व्यक्तियों से संबन्धित विभिन्न समस्याओं को रेखांकित करते हुए उनका विश्लेषण करते हैं। इसलिए पूर्ववर्ती शोधों के निष्कर्षों के साथ वर्तमान शोध द्वारा प्राप्त आकड़ों के विश्लेषण से उत्पन्न निष्कर्षों की तुलना कुछ सीमा तक कि जा सकती हैं। इससे यह भी स्पष्ट करने में सहायता मिलेगी की सामान्य वृद्ध व्यक्तियों की समस्याओं और वर्तमान शोध के उत्तरदाताओं जिनकी संतान केवल पुत्रियाँ है कि समस्याओं की प्रकृति किस प्रकार से भिन्न हैं। शोधकत्री द्वारा यथासंभव समाजशास्त्रीय अंतदृष्टि का उपयोग करते हुए एकत्रित किए गए आकड़ों के विश्लेषण पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं :-

शोध का उद्देश्य उतरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्टभूमि के बारे में जानना था एकत्रित आकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट

RRIJM 2015, All Rights Reserved

होता है कि आधे से अधिक उत्तरदाता 60 से 65 वर्ष आयु वर्ग के हैं, जिनमें लगभग 59% महिलाएँ और 41% पुरुष हैं। लगभग तीन चौथाई उत्तरदाता के पति या पत्नी जीवित है शेष विधवा या विधुर। लगभग दो तिहाई उत्तरदाता सामान्य वर्ग से है और अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति के उत्तरदाता क्रमश: 18.5% एवं 16.4%, सभी उत्तरदाता हिन्दू धर्म से हैं क्योंकि शोध क्षेत्र हिन्दू बाहुल्य क्षेत्र है ग्रामीण उत्तरदाताओं की संख्या नगरीय उत्तरदाताओं से अधिक हैं। केवल एक तिहाई उत्तरदाता ही नगर से हैं। बड़ी संख्या में उत्तरदाता गृहणी हैं जोकि कुल उत्तरदाताओं का लगभग 48% हैं, व्यवसाय के तौर पर द्वितीय स्थान कृषि का आता हैं जिनमें लगभग एक चौथाई उत्तरदाता संलगन हैं। 12.3% उत्तरदाता रिटायर्ड कर्मचारी हैं। 6.8% उत्तरदाता मजदूरी से अपना जीवन यापन करते हैं। इतनी ही संख्या में उत्तरदाता कुछ भी करने में सक्षम नही हैं। सालाना आय से संबन्धित आकड़ों से यह स्पष्ट हुआ की लगभग एक तिहाई उत्तरदाताओं की सालाना आय केवल वृद्धावस्था पेंशन है , जोकि 16,800 रूपय हैं। जबकि 20% उत्तरदाता ऐसे है जिनकी सालाना आय 50 ,000 से ज्यादा हैं। 15% महिला उत्तरदाता आर्थिक रूप से पति पर निर्भर हैं। कुछ उत्तरदाता ऐसे भी है जिनके पास बुढ़ापा पेंशन के साथ साथ कृषि आय व अन्य आय भी हैं। लगभग 38% उत्तरदाताओं की केवल एक संतान हैं व एक चौथाई उत्तरदाताओं की बेटियों की संख्या दो हैं। पाँच वाँ भाग उत्तरदाताओं की बेटियों की संख्या चार या इससे अधिक हैं। 2% ऐसे भी उत्तरदाता है जिनकी सात पुत्रियाँ हैं इस प्रकार उत्तरदाताओं की संख्या का प्रसार (Range) 1-7 है। अधिकतर उत्तरदाता अर्थात दो तिहाई अपने पत्नी या पति के साथ रहते हैं। जबकि एक चौथाई के लगभग उत्तरदाता अकेले रहते हैं। बहुत ही कम संख्या में उत्तरदाता दोहता , दोहती, बेटी, व अपने भाई के साथ रहते हैं। एक उत्तरदाता अपनी दो पत्नियों के साथ रहता हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. अल्पना बिमल ,समायोजन का समाजशास्त्र ,आर. बी. अस. ए. पब्लिशर्स, जयपुर 2004
2. सरिता शर्मा (2015) माता – पिता का बढ़ता अकेलापन ,पंजाब केसरी 24 सितंबर 2015
3. सीनियर सिटिज़न: प्रॉबलम एंड वेल्फेयर,लोक सभा सेक्रेटरियर , रेफ्रेंसे न: 27/आर/रेफ़./ 2013
4. डॉ. शकुंतला . सी. शेत्तर, प्रॉबलम ऑफ एज्ड इन चेंगिंग इंडिया स्केनरिओ 2013
5. ज. बालमुरुगन एवं डॉ. जी. रामथीर्थम, हेल्थ प्रॉब्लेम्स ऑफ एजेड पीपल ,इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोश्ल साइन्स , 2012
6. के. एल. शर्मा, स्टडी इन जेरोंटोलोजी, रावत पब्लिकेशन, 2007
7. आसिया नसरीन, अर्बन एल्डर्ली, कन्स्प्ट पब्लिसिंग कंपनी
8. डबल्यूडबल्यूडबल्यू. यूएन . डीईएसए > पब्लिकेशन पेज 12
9. हरीकृष्ण रावत , उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश , रावत पब्लिकेशन,2011
10. सोहन राज तातेड़ , डॉ गजेन्द्र सिंह शेखावत ,वरिष्ठ नागरिक जीवन दर्शन, ग्रन्थ विकास , जयपुर 2014
11. अरुण कुमार, मनोविज्ञान , समाजशास्त्रतथ शिक्षा में शोध विधियाँ , मोतीलाल बनरसीदास, 2013
12. प्रीति दुबे , भारत में समाज कल्याण, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
13. एडवर्ड, प्रीस्टन, रक्सिन, बेईगटसन, टाइप ऑफ कन्फ़िलक्ट्स एंड टेंशनस बीट्विन ओल्ड़र पैरेंट्स एंड अडल्ट चिल्ड्रन,1999
14. एंद्रेय ई. विलसन , द सोशियोलॉजी ऑफ एजिंग, 2006
15. रोशनी पाण्डेय, अंजु मल्होत्रा, सन प्रेफेरेंस एंड डॉटर नेग्लेक्ट इन इंडिया,2006
16. ठक्कर, विरडिया, शाईख, बंसल, शाह ,शाह, मेल चाइल्ड प्रेफेरेंस फॉर द फ़र्स्ट चाइल्ड डिक्रिजिंग एमंग वुमेन इन सूरत सिटी ,2011
17. एम. जेयासीलन , एल्डर एब्युज : ए सोसिओलोजिकल एनालिसिस ऑफ ओल्ड एज होम ऑफ चेन्नई,2013
18. ए. के. तिवारी, समाजशास्त्र, बौद्धिक प्रकाशन,